उत्तरमाला

खंड 'अ' (वस्तुपूरक प्रश्न)

1.	1. (द)	2. (द)	3. (ब)	4. (स)	5. (ब)
			अथवा		
	1. (ब)	2. (ब)	3. (स)	4. (द)	5. (अ)
2.	1. (अ)	2. (ब)	3. (द)	4. (द)	5. (द)
			अथवा		
	1. (अ)	2. (ब)	3. (अ)	4. (अ)	5. (ब)
3.	1. (ब)	2. (ब)	3. (अ)	4. (अ)	5. (द)
4.	1. (अ)	2. (अ)	3. (ब)	4. (स)	5. (स)
5.	1. (द)	2. (अ)	3. (अ)	4. (स)	5. (द)
6.	1. (अ)	2. (ब)	3. (द)	4. (अ)	
7.	1. (स)	2. (ब)	3. (स)	4. (द)	
8.	1. (द)	2. (स)	3. (स)	4. (द)	5. (अ)
9.	1. (अ)	2. (स)	3. (ब)	4. (स)	5. (स)

खंड 'ब' (वर्णात्मक प्रश्न)

उ.10

(अ) पशु पर्व के आयोजन के अवर पर जब वामीरों ने तताँरा को अपने सामने पाया तो वह जोर जोर से रोने लगी। तभी उसकी माँ वहाँ पहँच गई। उसने तताँरा को बहुत बुरा भला कहा। गाँव वालों ने भी तताँरा का विरोध किया। इस अपमान से क्रोधित होकर तताँरा ने अपनी तलवार जमीन में घोंप दी और पूरी ताकत से उसे खींचता चला गया। इससे द्वीप के दो टुकड़े हो गए। एक ओर तताँरा था दूसरी ओर वामीरों, एक दूसरे को पुकारते रहे। तताँरा का कुछ पता नहीं चला। वामीरों भी उसके बिना पागल हो गई। बाद में उसे गाँव वालों ने बहुत ढूँढ़ा, लेकिन उसका भी कही पता नहीं चला। इस प्रकार दोनों का अंत हो गया।

(ब) वजीर अली की योजना यह भी कि किसी तरह वह नेपाल पहुँच जाए। वहाँ पहुँचकर अफगानी हमले का इंतजार किया जाए अपनी ताकत बढ़ाई जाए और फिर सआदत अली के अवध की गद्दी से उतारा जाए। अवध पर कब्जा करके वह अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से भगाना चाहता था। अंग्रेजों के विचार से वह ऐसा करने में सफल हो सकता था: क्योंकि अंग्रेज अपनी पूरी ताकत लगाकर भी उसे पकड़ नहीं पा रहे थे और वह अपने कार्य में जी जान से लगा था।

(स) मीराबाई श्री कृष्ण की अनन्य भक्त हैं। वे हर समय उनके पास रहना चाहती हैं, उनके दर्शन करना चाहती हैं तथा उनकी सभी प्रकार से सेवा करना चाहती हैं। यह कार्य एक चाकर द्वारा ही संभव है। अच्छा सेवक अपनी सेवा से अपने स्वामी को प्रसन्न करके उसक कृपापात्र बन जाता है। मीरा भी अपने आराध्य को प्रसन्न करके उनकी कृपा प्राप्त करना चाहती है, इसीलिए वह उनकी चाकरी करना चाहती है।

उ.11 वह एक छह मंजिला इमारत थी उसकी छत पर दफ्ती की दीवारों से बनी एक सुन्दर पर्णकुटी थी। उसमें सुन्दर चटाई बिछी हुई थी। कुटी के बाहर एक बेडॉल मिट्टी का बरतन था, जिसमें पानी भरा था। लेखक और उसके मित्र ने उसमें हाथ पैर धोए, तौलिये से पोंछे और फिर अंदर गए। अंदर एक चाजीन बैठा था। उसने उठकर दोनों को झुककर प्रणाम किया और आइए, तशरीफ लाइए कहकर स्वागत किया। उन्हें बैठने की जगह दिखाई। अँगीठी सुलगाई। उस पर चायदानी रखी। बगल के कमरे से जाकर कुछ बरतन लाया। उन्हें तौलिये से साफ किया। उसकी इन सभी क्रियाओं में लेखक और उसके मित्र को मधुर संगीत धुन जैसी अनुभूति हो रही थी। वहाँ अद्भूत शांति थी। चायदानी में पानी का खदबदाना भी उन्हें सुनाई दे रहा था।

CBSE-2021\Module\CBSE-Sample Papers_(10th)\Hindi\4. SAMPLE PAPER_1 Course (B)_ Solution.p65"

उ.12

(अ) 'टोपी शुक्ला' पाठ में टोपी और इफ्फन क्रमशः हिन्दु ओर मुसलमान कौम का प्रतिनिधित्व करते है। इन दोनों चरित्रों के माध्यम से लेखक यह संदेश देना चाहता है कि सब धर्मो के लोग एक ईश्वर की रचना है। उनमें केवल नाम का भेद है, अन्यथा सब एक ही है। लेखक बताना चाहता है कि धर्म, जाति भाषा और परम्पराएँ अलग होने पर भी देश के हिन्दू और मुसलमान सौहार्द भाव से रह सकते है। पाठ में टोपी हिन्दू है और इफ्फन मुसलमान है। दोनों के परिवार धार्मिक कट्टरवादी हैं, लेकिन फिर भी इन दोनों में गहरी मित्रता है। वे कहानी में भी एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। लेखक संदेश देना चाहता है कि यदि इसी प्रकार कट्टरवाद को छोड़कर दोनों कौमों के लोग एक दूसरे के साथ भाईचारे का संबंध जोड़ लें, तो देश में मजहब के नाम पर इंसानियत का खून बहना रोका जा सकता है।

(ब) ठाकुरबारी जैसी संस्थाओं को ग्रामीण समाज के प्रतिएक महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वहन करना चाहिए। किसी भी सामाजिक अथवाधार्मिक संस्था का यह दायित्व है कि वह समाज में व्याप्त स्वार्थ की भावना को दूरकर जन जन में परोपकार का भाव जगाए। समाज में व्याप्त अनाचार, अराजकता, अन्याय, अंधविश्वास और पापाचार को दूरकर जन जन में संतोषएंव धैर्य के भाव जाग्रत करे। हरिहर काका कहानी में भी गाँव के लोगों की ठाकुरबारी से होता था तो वहीं दुखी मन को आश्रय देने का स्थान भी उन्हें ठाकुरबारी ही दिखाई देता था, परन्तु आस्था और विश्वास के इस मंदिर ने हरिहर काका जैसे लोगों के साथ विश्वासघात और दुर्व्यवहार करकेये दिखा दिया कि बदलते परिवेश के साथ साथ धार्मिक संस्थाएँ भी भ्रष्टाचार और अपराध के अड्डे बन गई है। ऐसे में ठाकुरबारी के महंत एवं तथाकथित साधु समाज के प्रति जन मानस में घृणा का भाव ही पैदा होता है: क्योंकि समाज उनसे अच्छे और आदर्श आचरण की अपेक्षा करता है। लोभ लालच और षड्यंत्रों में फँसे साधु संतो के इस आचरण सेयुवा पीढ़ी पर बुरा प्रभाव पड़ता है। धार्मिक संस्थाओं और समाज की उच्च आदर्शवादिता से उनका विश्वास उठने लगता है, जो किसी भी समाज के लिए हितकारी नहीं हैं।

(स) मास्टर प्रीतमचंद बहुत ही कठोर एवं सख्त स्वभाव के अध्यापक थे। अनुशासन के लिए विद्यार्थियों की पिटाई करने में उनके मन में तनिक भी दया या संकोच का भाव नहीं आता था। एक बार शब्द रूप याद न हाने के कारण उन्होनें चौथी कक्षा के छोटे छोटे बच्चों को मुरगा बना दिया। हेडमास्टर शर्मा जी ने जब उनका यह अमानवीय व्यवहार देखा तो बहुत क्रोधित हुए और उन्होने पी. टी. साहब को मुअत्तल कर दिया। हमारे विचार से उनका निलंबन उचित था क्योंकि छोटे छोटे बच्चों को शारीरिक दंड देना अमानवीय है। अध्यापक की कठोरता का बच्चों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है और बहुत से बच्चे स्कूल ही छोड़ देते है: अत: हेडमास्टर शर्मा जी ने पी. टी. साहब को मुअत्तल करके सराहनीय कार्य किया।

उ.13

(अ) समय बहुत अमूल्य होता है। सोने, चाँदी, हीरे आदि हर एक चीज़ का मूल्य लगाया जा सकता है लेकिन समय की कोई कीमत नही लगाई जा सकती। समय का प्रत्येक क्षण अमूल्य होता है। पैसे-रूपयों को हम बैंक या कहीं और जमा कर सकते हैं। लेकिन समय टिकाऊ नहीं होता और वह किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता है। वह इतना तीव्रगामी है कि उसे कोई वायुयान तक नहीं पकड़ सकता है। अगर कोई पकड़ सकता है, तो सिर्फ़ वह जो उसकी गतिविधि पर दृष्टि जमाए हुए उसके प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करता है। कबीरदास जी ने समय के संबंध में कहा है-

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परले होयगी, बहुरि करौगे कब।।

अर्थात हमें जो काम कल करना है, उसे आज ही कर लेना चाहिए और कार्य आज करना है, उसे तुरंत करना चाहिए जिन्होंने जीवन के एक-एक पल का सदुपयोग किया है, वे ही सफलता के शिखर पर पहुँच सके हैं। समय का सुदपयोग ही सफलता का आधार है। जो व्यक्ति समय का दुरूपयोग करते है, वे हमेशा असफल होते हैं और उन्हें अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है। धन एक बार चले जाने से उसे फिर प्राप्त किया जा सकता है लेकिन बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता है। जो इस रहस्य को समझ लेता है, वह कभी असफल नहीं होता है। समय ही वह कसौटी है जिस पर मनुष्य के जीवन को परखने से उसकी सफलता और असफलता की परीक्षा होती है।

CBSE-2021\Module\CBSE-Sample Papers_(10th)\Hindi\4. SAMPLE PAPER_1 Course (B)_ Solution.p65"

(ब) मनुष्य का मन स्वभाव से बहुत ही चंचल होता है। मनुष्य के मन में अनेक प्रकार की लालसाएँ तथा इच्छाएँ उठती रहती है। जिसका कोई अंत नहीं होता है। उसकी एक इच्छा के समाप्त होते ही दूसरी इच्छा का जन्म हो जाता है। यह सिलसिला चलता ही रहता है। जिस व्यक्ति का मन संतुष्ट होता है वह धनवान है और जिस व्यक्ति का मन संतुष्ट नहीं होता वह व्यक्ति बिलकुल निर्धन है, चाहे उसके पास सभी साधन क्यों न हों। कबीरदास का कथन है, ''संतोष रूपी धन के सामने अन्य सभी धन मिट्टी के समान है।'' जिस व्यक्ति के पास संतोषरूपी धन आ जाता है, उसे किसी औरधन को प्राप्त करने की इच्छा नहीं रहती। आज के मानव में दूसरे लोगों को खुश देखकर ईर्ष्या की भावना पैदा होती है। ईर्ष्या की भावना के कारण ही मनुष्य के जीवन में असंतोष देखा जा सकता है। आज के समय में व्यक्ति धन कमाने के चक्कर में बुरे-से -बुरा काम करने में संकोच का अनुभव नहीं करता है, क्योंकि उसमें पैदा हुआ लालच उसे उसकी बुराई के बारे में सोचने ही नहीं देता। आज का मानव धन के लालच में पड़कर मानव की जगह दानव बन चुका है। हमारे समाज में होने वाले सभी अपराधों के पीछे धन पाने की लालसा ही है। हम लोगों का जीवन और अधिक पाने की लालसा में ही भटकता रहता है। इसके विपरीत जिस व्यक्ति का अपनी इच्छाओं के ऊपर नियंत्रण होता है, वह व्यक्ति तो दुनिया का सारा सुख अपने काबू में कर लेता है। वह निर्धन होते हुए भी सुख का अनुभव करता है, लेकिन जो व्यक्ति अपनी इंद्रियों तथा इच्छाओं को काबू में नही कर पाता, वह व्यक्ति जीवन भर अशांति का जीवन व्यतीत करता है। धन की जितनी अधिक इच्छा होगी, लोभ का उतना ही अधिक जन्म होगा। लोभ पाप का मूल होता है। जो लोग धन से ऊपर किसी भी चीज़ को नहीं मानते हैं, वे धन को प्राप्त करने की इच्छाओं पर काबू नहीं रख पाते। ऐसे लोग धनी होने पर भी सदा दुखी रहते हैं। इसलिए मन का संतोषी व्यक्ति धनी है। जबकि अंसतोषी व्यक्ति सभी सुख-सुविधाओं के होते हुए भी निर्धन है।

(स) 'सादा जीवन उच्च विचार' का सामान्य अर्थ यही है कि हमें सादगी से जीवन व्यतीत करना चाहिए तथा अपनी भावनाओं को महान बनाए रखना चाहिए। महान व्यक्तियों का हमारे देश में अभाव नहीं रहा है। उदाहरणत: आप गांधी जी को ही देख लीजिए, कितनी सादी वेश-भूषा में रहते थे लेकिन अपने महान विचारों से वह संसार में वंदनीय हो गए। ऐसे व्यक्ति संसार में कम होते है, जो जन्म से ही विख्यात होते हैं। अधिकांश ख्याति अपने चरित्र-बल और परिश्रम से ही प्राप्त होती है। कई ऐसे महान व्यक्ति हैं, जिनका जन्म साधारण कुल में हुआ और वह अपने सद्गुणों और परिश्रम से विख्यात हो गए। जीवन में सादगी का समावेश करना तथा तुच्छ विचारों को जीवन से दूर कर देना अपने आप में महान गुण है। सादा जीवन व्यतीत करने वाला विनयशील, शिष्ट और आत्मनिर्भर होता है। अपने जीवन को सफल बनाने के लिए सहिष्णुता, साहस, चरित्र-बल आदि गुणों को अपने जीवन में उतारना अति आवश्यक है। ये गुण ही हमारे जीवन को प्रभावित व विकसित करते हैं। वेश-भूषा, रहन-सहन और आचार-विचार का एक स्तर होना चाहिए। बड़ी-से -बड़ी मुसीबतों के आगे भी झुकना नहीं चाहिए। अपने धैर्य को बरकरार रखना चाहिए। धन का अपव्यय नहीं करना चाहिए तथा अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखना चाहिए। अर्थात अपने जीवन को यथा संभव सादा बनाएँ।

उ.14 परीक्षा भवन

कोटा।

दिनांक 20 अगस्त, 20××

सेवा में,

श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी,

कोटा नगर निगम,

कोटा - 000000

विषय :- क्षेत्र में फैली गंदगी के संबंध में।

महोदय,

CBSE-2021\Module\CBSE-Sample Papers_(10th)\Hindi\4. SAMPLE PAPER_1 Course (B)_ Solution.p65"

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान आपने क्षेत्र में चारों ओर फैली गंदगी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। मैं आदर्श नगर का निवासी हूँ, जो किसी समय सबसे अधिक साफ-सुथराक्षेत्र माना जाता था, किंतु आज इस क्षेत्र की दशा अत्यंत चिंताजनक है। जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे हुए हैं, जिन पर मच्छर एवं मक्खियाँ भिनभिनाते रहते हैं। जिसके कारण हमारे क्षेत्र में रह रहे लोगों में मलेरिया तथा अन्य बीमारियों के फैलने का खतरा भी दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। हमारे क्षेत्र में गंदगी इतनी बढ़ गई है कि क्षेत्र से जाने वाले लोागों को नाक बंद करके निकलना पड़ता है इस कारण लोगों का जीना दूभर हो गया है।

अत: आपसे निवेदन है कि कृपया इस क्षेत्र की स्वास्थ्य सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए बिना विलंब किए कोई महत्वपूर्ण कदम उठाया जाए। हम सभी क्षेत्रवासी आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

क. ख. ग.

अथवा

परीक्षा भवन

दिल्ली।

दिनांक 23 फरवरी, 20××

सेवा में

श्रीमान संपादक महोदय

दैनिक हिंदुस्तान

नई दिल्ली

विषय दिल्ली में बढ़ती हुई अपराधवृत्ति से संबंधित।

महोदय

मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से दिल्ली सरकार के अधिकारियों काध्यान दिल्ली में बढ़ती हुई अपराधवृत्ति की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ। आशा है कि आप मेरे पत्र को अपने लोकप्रिय समाचार-पत्र में प्रकाशित करेंगे।

अत्यंत खेद के साथ मुझे लिखना पड़ रहा है कि दिल्ली में आजकल गुंडागर्दी, बलात्कार, हत्याएँ, लूटपाट, अपहरण जैसी आपराधिक घटनाएँ लगातार बढ़ रही हैं। देश की राजधानी दिल्ली 'अमन चैन की राजधानी' न रहकर असामाजिक तत्त्वों व अपराधियों द्वारा निर्मित 'भय व आतंक के वातावरण की राजधानी' बनकर रह गई है। दिन-दहाड़े दुकानदारों से लूट, घरों में चोरी, छोटे बच्चों का अपहरण, लड़कियों से छेड़छाड़ व बलात्कार तो जैसे आम बात हो गई है। सुबह-सुबह समाचार-फ्र देखने पर ऐसा लगता है जैसे दिल्ली में पुलिस का नहीं, बल्कि अपराधियों का नियंत्रण है।

अत: केंद्र सरकार तथा पुलिस के अधिकारियों से मेरा अनुरोध है कि वे इस संबंध मे कठोरतम कार्यवाही करें, जिससे अपराधियों के मन मे कानून के प्रति भय उत्पन्न हो और वे अपराध करने से पहले दस बार सोचें। अपराधियों पर नियंत्रण रखा जाना अत्यंत आवश्यक है।

सधन्यवाद

भवदीय

क.ख.ग.

CBSE-2021\Module\CBSE-Sample Papers_(10th)\Hindi\4. SAMPLE PAPER_1 Course (B)_ Solution.p65"

उ.15

रागिनी पब्लिक स्कूल, नोएडा

15 फरवरी, 20×× **सूचना**

यात्रा का आयोजन

सभी छात्र-छात्राओं को सूचित किया जाता है कि हमारा विद्यालय नोएडा से नैनीताल की यात्रा का आयोजन कर रहा है। यात्रा से संबंधित जानकारी इस प्रकार है-

दिनांक	-	25 फरवरी से 2 मार्च तक।
मूल्य	-	10,000/- प्रति विद्यार्थी
योजना	-	प्रचलित स्थानों पर जाना, पर्वतीय स्थल का आनंद, अन्य आकर्षक एवं मनोरंजक गतिविधियाँ।

इच्छुक छात्र-छात्राएँ 20 फरवरी तक अपने नाम कक्षाध्यापिका को दे दें।

अध्यक्षा

विद्यार्थी परिषद

अथवा

स्वास्थ्य संगठन, नोएडा

15 फरवरी, 20×× **सूचना**

नि:शुल्क नेत्र जाँच शिविर का आयोजन

आपके नोएडा क्षेत्र बी-226, सैक्टर-26 में स्वास्थ्य संगठन द्वारा नि:शुल्क नेत्र जाँच शिविर का आयोजन 16 फरवरी, 20×× से 28 फरवरी, 20×× तक किया जा रहा है। इस शिविर के अंतर्गत अनुभवी नेत्र विशेषज्ञ चिकित्सक (डॉक्टर) उपस्थित रहेंगे।

विस्तृत जानकारी हेतु हमारे कार्यालय में संपर्क करें।

क, ख, ग

सचिव, स्वास्थ्य संगठन

उ.16

अथवा

CBSE-2021\Module\CBSE-Sample Papers_(10th)\Hindi\4. SAMPLE PAPER_1 Course (B)_ Solution.p65"

उ.17 **उक्ति का अर्थ** ''मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना'' इस उक्ति का अर्थ यह है कि कोई भी धर्म आपस में भेदभाव करने का पाठ नहीं पढ़ाता।

मानव की उस असीम शक्ति में गहरी आस्था हो रहीं है और यह शाश्वत सत्य है कि सभी मानव एक ही ईश्वर की संतानें है। विभिन्न धर्मो से संबंधित होने के कारण सबकी धर्म संबंधी मान्यताएँ अलग अलग है, परन्तु सबका ध्येय एक ही है, उस परमपिता की प्राप्ति और साथ ही श्रेष्ठ कार्यो द्वारा अमन-चैन की प्राप्ति।

इस उक्ति से संबंधित एक कथा प्रस्तुत है

कथा तीन मित्र थे - राम, असलम और गुरमती। ये सब एक-दूसरे के घर सभी त्यौहारों, उत्सव और विवाह समारोह में सपरिवार सम्मिलित होते थे। उनकी इस एकता से कुछ राजनेता खिन्न थे। वे अपने स्वार्थवश इनमें द्वेष भावना पैदा करने का प्रयास करते और तीनों को उनक धर्म और दंगों से संबंधित बाते बताकर भड़काने की कोशिश करते। ये तीनों थोड़ा विचलित होने लगे। उनका मिलना-जुलना लगभग खत्म हो गया, पर वे द्वेष भावना का शिकार नहीं हुए।

वे एक-दूसरे के धर्म का सम्मान करते थे, क्योंकि वे अच्छी तरह जानते थे कि धर्म कभी बाँटता नहीं, बल्कि जोड़ता है। धर्म तो मानवीय पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। तभी ईद के दिन, राम और गुरमीत सपरिवार असलम के घर पहुँचते हैं और सबको ईद की मुबारकबाद देते हैं। कुछ दिन पश्चात् दीपावली के अवसर पर असलम भी सपरिवार गुरमीत और राम के घर मुबारबाद देने आता हैं। तीनों परिवार खुशी-खुशी समय व्यतीत करते हैं तथा मिठाई व पकवानो का आंनद लेते हैं। उपरोक्त घटना ने इस उक्ति को साक्षात् कर दिया।

''मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।''

सीख प्रस्तुत कथा से हमें यह सीख मिलती है कि धर्म के आधार पर भेदभाव करना अनुचित है। अत: हमें सभी धर्मो का आदर करना चाहिए और मिलजुलकर रहना चाहिए।

अथवा

उक्ति का अर्थ ''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।'' प्रस्तुत उक्ति का अर्थ हैं - यदि हमारे मन में किसी कार्य के प्रति दृढ संकल्प है, तो कोई भी कार्य असंभव नहीं है। यदि हमारे मन ने हार मान ली तो हार निश्चित हो जाएगी और यदि हमारे मन में आत्मविश्वास है, जीतने की इच्छा है तो जी निश्चित होती है। यह उक्ति निम्नलिखित कथा द्वारा स्पष्ट रूप से समझी जा सकती है।

कथा एक बार की बात है, दो राजाओं के बीच भयंकर युद्ध हुआ। जैसा कि होता है कि युद्ध में एक की ही विजय होती है और एक की हार निश्चित होती है।

इस युद्ध में भी ऐसा ही हुआ। एक राजा इस युद्ध में हार गया। उसे जन-धन की बहुत हानि हुई उसके सैनिक पराजित राजा को ढूँढ रहे थे। पराजित राजा अपना जीवन बचाने के लिए भागा-भागा फिर रहा था। उसने छिपते-छिपाते एक खोह में शरण ली। वह मन से पूरी तरह पराजित हो चुका था। खोह में छिपा हुआ भी वह मानों अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे इस बात का पूरा विश्वास था कि शत्रु की तलवार कभी भी उसका काम तमाम कर देगी। वह इन्ही विचारों में खोया हुआ था कि उसकी नजर एक मकड़ी पर पड़ी, जो खोह के दरवाजे पर जाला बनाने में व्यस्त थी, उसकी कोशिशें बार-बार नाकाम साबित हो रही थी, लेकिन उसने प्रया करना नहीं छोड़ा। राजा ने सोचा कि वह बेकार ही प्रयत्न कर रही है। भला आधार के बिना जाला कैसे बन सकता है, लेकिन थोड़ी देर बाद राजा ने देखा कि मकड़ी जाला बनाने में सफल हो गई। थोड़ी देर में पूर खोह के मुँह पर जाला बनाया जा चुका था। तभी शत्रु सैनिक वहीं आ पहुँच, लेकिन खोह के मुँह पर मकड़ी का जा बना देख लौट गए। करीब आई हुई मृत्यु तो टल गई, पर राजा एक गहरे विचार में पड़ गया। उसने सोचा कि मैं स्वय तन-मन से पराजित था। अत: मैने मकड़ी को ाी हारा हुआ मान लिया था, लेकिन वह छोटी-सी मकड़ी को भी हारा हुआ मान लिया था, लेकिन वह छोटी-सी मकड़ी हारी हुई नहीं थी। वह बार-बार गिरकर भी निराश और परास्त नहीं हुई। क्या मैं मनुष्य होकर भी इस मकड़ी से दुर्बल हूँ? उसने अपने मन को मजबूत किया और संकल्प लिया कि वह अपने शत्रुओं का अवश्य पराजित करेगा। वह तुरन्त उस खोह से बाहर आया। अब वह एक हताश-निराश, पराजित राजा नही था, वरन् मजबूत इरादे वाला व्यक्ति था, जिसे हर हाल में विजय पानी थी। उसने अपने साथियों को एकत्रा किया और अंत में अपने शत्रु को हरा कर अपना राज्य पुन: प्राप्त किया। अत: यह सच ही है कि

''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।''

सीख प्रस्तुत कथा से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने मन को मजबूत और दृढ-संकल्प करके कार्य करना चाहिए, तभी हमें सफलता प्राप्त हो सकती है।

CBSE-2021\Module\CBSE-Sample Papers_(10th)\Hindi\4. SAMPLE PAPER_1 Course (B)_ Solution.p65"